द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□□□□□□□, □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

□□□□-यह वधि साधारण आराधना वधि के अन्□तर्गत नर्धिारति समय पर सम्□पन्□न की जा□□

□□□□□□□ -हम सब खड़े होकर □क गीत गा□ंगे □ गीत क्रमांक------□

□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□

(□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□)

□□□ -□□ □□□□□ □□ □□□□ □□

□□□□□□-जग सेवक चर हैं हम हम हम, सब सेवक वर हैं हम हम हम

1. सेवक चर हैं सेवक वर हैं, सुचति‍ा शील दया के घर हैं

सेवा में रहते तत्□पर हैं करते हर दम श्रम श्रम श्रम□

2. कष्□ट कहीं पर जो सुन पावें सुनते ही □क दम वां जावेंजो कर सकें मदद पहुंचावें मुस्□तैदी से हम हम हम□ 3. चाहे पड़ रही धूप कड़ी हो, वर्षा की लग रही झड़ी हो
कड़क के बजिली तड़क रही हो चमक रही हो चम चम चम□

□□□□□□□□ -प्रयि मत्रिो, आज हमारे लि□ हर्ष की बात है कि कलीसयिा के पदाधकिारियों का जनिका कलीसयिा की वभिन्ि□न सेवकाई हेतु चयन हुआ, उनका अभषिेक करें□ यह □क पवत्रि वधि है जसिका प्रचलन नये नयिम की कलीसयिाओं में पौलुस तथा अन्□य शषि्□यों के द्वारा कयिा गया□ प्रेरतिों के काम 6:1-6 में इसका उल्□लेख स्□पष्□ट रूप से कयिा गया है जो इस प्रकार है;

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

"उन दिनों में जब चेलों की संख्या बढ़ रही थी तब यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों का इब्रानी बोलने वाले यहूदियों से यह विवाद उठ खड़ा हुआ कि प्रतिदिन भोजन-वितरण में हमारी विधवाओं की अपेक्षा की जाती है। बारहों ने चेलों की मण्डली बुलाकर कहा, "हमारे लिए यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर के वचन को छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा करें। इसलिए, हे भाइयो, अपने में से सात सच्चरित्र पुरूषों को चुन लो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों कि हम इस कार्य का संचालन उनके हाथों में सौंप दें। परन्तु हम तो स्वयं प्रार्थना और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।"

यह बात समस्त मण्डली को उचित जान पड़ी; और उन्होंने स्तफनुस नामक एक पुरूष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस, प्रखुरूस, नीकानोर, तिमोन, परमनास और अन्ताकिया के निकुलाऊस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया। वे इन्हें प्रेरितों के सामने ले आए और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे।"

यह विधि निरन्तर पीढ़ी दर पीढ़ी से क्लीसियाओं में सम्पन्न की जाती रही है। इस विधि के द्वारा आज भी परमेश्वर के सेवक उसके भवन में, उसकी वेदी के सामने, उसकी तथा उसके संतों की उपस्थिति में स्वयं को उसकी सेवकाई हेतु समर्पित करते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि वे पूरी निष्ठा, पवित्रता एवं विश्वासयोग्यता के साथ क्लीसिया के कार्यो मे संलग्न रहेंगे। आज जब ....., ..., ..., (अर्पण किये जाने - वाले पदाधिकारियों के नाम) अभिषेक के लिए उपस्थित हुए हैं तो आइए, हम इन पदाधिकारियों पर तथा इस सम्पूर्ण अर्पण विधि पर परमेश्वर की आशीष मांगे।

□□□□□□□□□□ -

हे सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह के नाम से हम तेरे अनुग्रह के सिंहासन के सामने आए हैं, हम हृदय से धन्यवाद करते हैं तेरे प्रेम, दया, क्षमा, अनुग्रह और सभी उपकारों के लिये जो तू निरन्तर हम पर करता है। आज हम तुझे विशेष रूप से इन पदाधिकारियों के लिये धन्यवाद देते हैं जिन्हें तूने अपनी सेवकाई के लिये चुना है। पिता परमेश्वर, हम तुझसे इनके अभिषेक की सम्पूर्ण विधि पर आशीष मांगते हैं और तुझसे प्रार्थना करते हैं कि तू इनके साथ में हो कि जब ये पदाधिकारी तेरी उपस्थिति में तेरी वेदी और समस्त क्लीसिया के सामने जो प्रतिज्ञाएं करते हैं तो उनका स्मरण हर पल उनके हृदय में बना रहे। पूरी सच्चाई, परिश्रम, लगन, त्याग, धीरज, नम्रता एवं दीनता के साथ ये स्वयं को तेरी सेवकाई हेतु सम्पूर्णता से समर्पित कर सकें जिससे ये अपनी सेवकाई पूरी खराई से एवं विश्वासयोग्यता के साथ कर सकें क्योंकि इस विनती को हम अपने उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता प्रभु यीशु मसीह के नाम से मांगते हैं। आमीन!

□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ -

प्रभु यीशु मसीह ने क्लीसिया की स्थापना की, उसने इस क्लीसिया को बचाने के लिए

अपना लहू बहाया□ उसने इसे व्□यवस्थति और संगठति करने के लि□ अपने वचन के द्वारा

नर्िदेश दि□ □ 1कुरन्थियों 12:12, 18-19, 26-27 में यह बात स्□पष्□ट है कि;
“

जसि प्रकार देह तो □कहै और उसके कई अंग हैं, और देह के सब अंग यद्यपि अनेक हैं तौभी वे □कही देह हैं, इसी प्रकार मसीह भी है□ परन्□तु परमेश्□वर ने सब अंगो को अपनी इच्□छा अनुसार □क□क करके देह में रखा है□ और यदि वे सब के सब □कही अंग होते तो देह कहां होती? और यदि □कअंग दु□ख पाता है तो है तो उसके साथ सब अंग दुख पाते हैं, और यदि □कअंग सम्□मानति होता है तो सब अंग उसके साथ आनन्दति होते हैं□ इसी प्रकार तुम मसीह की देह हो और □क□क करके उसके अंग हो□
”

इस प्रकार मसीह की देह कलीसयिा की उन्□नति हेतु कलीसयिा के वभिन्□न अंग होते हैं□
इन अंगों के कलीसयिा में भनि्□न-भनि्□न कार्य होते हैं□ इन कार्यो के सुचारू रूप से नर्िवहन द्वारा ही कलीसयिा सुगठति □वं मज़बूत होती है□ इन सभी अंगों में आपसी सहयोग □वं सामन्□जस्□यता आवश्□यक होती है□
□□□□, □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□
□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□;
□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ -

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

“

इसलिए अवश्य है कि अध्यक्ष निर्दोष हो, केवल पत्नी का पति हो, संयमी, समझदार, सम्मानीय, अतिथि सत्कार करने वाला हो, परन्तु नम्र हो, झगड़ालू और धन का लोभी न हो

वह घर का अच्छा प्रबंध करता हो, अपने बाल-बच्चों को ऐसे अनुशासन में रखता हो कि वे उसका सम्मान करें। यदि कोई व्यक्ति अपने ही घर का प्रबन्ध करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा? वह कोई नया चेला न हो, कहीं ऐसा न हो कि अंहकार में पड़कर शैतान के समान दण्ड का भागी हो जाए। कलीसिया के बाहर के लोगों में वह सुनामी हो, कहीं ऐसा न हो कि किसी दोष में पड़कर वह शैतान के फन्दे में फंस जाए।

”

(1□□□□□□□□□ 3:2-7)

“

मेरे निर्देश के अनुसार प्रत्येक नगर में प्राचीनों को नियुक्त करो

प्राचीन निर्दोष हो, केवल पत्नी का पति हो, तथा उसके बच्चे विश्वासी हों, दुराचारी और निरंकुश न हों। क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना आवश्यक है; वह न तो स्वेच्छाचारी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करने वाला, और न ही नीच कमाई का लोभी हो, परन्तु अतिथि-सत्कार करने वाला, भलाई का चाहने वाला, समझदार

न्□ यायप्रयि, भक्□त व आत्□मा-संयमी हो वह उस वशि्□वासयोग्□य वचन पर□ स्थरि रहे जो धर्मोपदेश के अनुसार हैं, जसिसे कि वह खरी शक्षिा का उपदेश देने और वरिोधयिों का मुंह बन्□द करने में भी समर्थ हो□

”

(तीतुस 1:5-9)

“

वृद्ध पुरूष संयमी, सम्□मानीय व समझदार हों तथा वे वशि्□वास, प्रेम और धैर्य में पक्□के हों□

”

(तीतुस2:2)

“

जवानी की अभलिाषाओं से भाग और जो लोग शुद्ध हृदय से प्रभु का नाम लेते हैं उनके साथ धार्मकिता, वशि्□वास, प्रेम और शान्ति का अनुसरण कर□ परन्□तु मूर्खता और अज्ञानपूर्ण ववािदों से यह जान कर अलग रह कि इन से झगड़े उत्□पन्□न होते हैं□ परमेश्□वर के दास को झगड़ालू नहीं वरन् सब पर दया

करने वाला, योग्□य शक्षिक, सहनशील और वरिोधयिों को नम्रता से समझाने वाला होना चाहि□; क्□या जाने परमेश्□वर उन्□हें पश्□चात्ताप का मन दे कि वे भी सत्□य को पहचािनें, और सचेत हो कर शैतान के फन्□दे से बच निकलें, जसिने उन्□हें अपनी इच्□छा पूर्ण करने के लि□ बन्□दी बना रखा है□
''

(2तीमुथयिुस 2:22-26)

"

मैं तुम्□हारे मध्□य प्राचीनों को प्रोत्□साहति करता हूं, कि अपने मध्□य स्थति परमेश्□वर के झुंड की रखवाली करो - और यह किसी दबाव से नहीं, पर स्□वेच्□छा से तथा परमेश्□वर की इच्□छा के अनुसार, तुच्□छ कमाई के लि□ नहीं वरन् उत्□साहपूर्वक करो□ जो लोग तुम्□हें सौंपे ग□ हैं, उन पर प्रभुता न जताओ, परन्□तु अपने

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

झुण्□ ड केलाि□ आदर्श बनो□ जब प्रधान रखवाला प्रकट होगा तो तुम अजर महमिा का मुकुट पाओगे□
"

(1पतरस 5:1-4)

"

इसलाि□ अपनी और अपने पूरे झुण्□ ड की रखवाली करो जसिके मध्□ य पवित्र आत्□ मा ने तुम्□ हें अध्□ यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्□ वर की उस कलीसयिा की रखवाली की करो जसि उसने अपने ही लोहू से खरीदा है□
"

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

(प्रेरतिो के कम 20:28)

“

उन□ होंने प्रत□ येक कलीसयिा में प्राचीन नयिुक□ त कर के उपहास सहति प्रार्थना की, और उन□ हें प्रभु के हाथों में सौप दयिा जसि पर उन□ होंने वशि□ वास कयिा था

”

(प्रेरतिों के कम 14:23)

□□□□□□□ □□□ -

इस प्रकार प्राचीनों (प्रेसबटिर्स, बशिप ओवरसयिर्स) क प्रमुख कर्य

हर प्रकार की बुराई, शैतानी शक्तियों □ वं युक्तियों से क्लीसिया की रखवाली करना, आत्मिक मुद्दों में क्लीसिया की अगुवाई करना और सदस्□ यों को वचन की शिक्षा देना है□

□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ -

“

इसी प्रकार धर्म-सेवक भी प्रतिष्ठित व्□ यक्ति हों, दो मुंहे या पियक्□ कड़ न हों और न नीचे कमाई के लोभी हों,

परन्□तु वशि्□वास के भेद को नरि्मल
ववेक से सुरक्षति रखने वाले हों□
और ये भी पहले परखे जा□ं, तब
यदि दोषरहति हों तो धर्म-सेवक की
भांति इन्□ हें सेवा करने दो□
”

(1तीमुथियुस 3:8-10)

“धर्म-सेवक□ कपत्□नी का पति
हो और अपने बाल-बच्□चों तथा

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

परविार का □कअच्□छा प्रबन्□धक होँ क्□योंकि जनि्□होंने धर्म-सेवकों का कार्य अच्□छी तरह से पूरा कयिा है, वे अपने लि□ तो □कउच्□च सम्□मान तथा उस वशि्□वास में जो मसीह यीशु में हैं, दृढ़ नशि्□चय प्राप्□त करते हैं □ ”

(1तीमुथयिुस 3:12-13)

“

जो कुछ तुम करते हो, उस कार्य
के मनुष्□ यों का न□ हीं वरन् प्रभु
का समझकर तन-मन से करो, यह
जानते हु□ कि तुम प्रभु से
प्रतिफल अर्थात् मीरास पाओगे□
तुम प्रभु मसीह ही की सेवा करते
हो□
”

(कुलस्सियों 3:23-24)

“

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

मनुष्□ यों को प्रसन्□ न करने वालों के समान दिखावटी सेवा न करो, पर मसीह के दासों के सदृश हृदय से परमेश्□ वर की इच्□ छा पूरी करो□ इसा सेवा को मनुष्□ य की नहीं पर प्रभु की जानकर सुइच्□ छा से करो, यह जानते हु□ कि चाहे दास हो या स्□ वतन्□ त्र, जैसा अच्□ छा

कार्य करेगा, वह प्रभु से वैसा ही प्रतफिल पा□ गा□
”

(इफसियों 6:6-8)

“

मेरी आंखें देश के वशि्□ वासयोग्□ य लोगों पर लगी रहेंगी क वे मेरे साथ रहें; खरे मार्ग चलने वाला ही मेरा

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

सेवक होगा

□

छल करने वाला मेरे घर के भीतर रहने न पा□ गा; झूठ बोलने वाला मेरे सामने बना न रहेगा

,,

(भजन संहिता 101:6,7)

□□□□□□□□ □□□ -

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

इस प्रकार सेवकें का प्रमुख कार्य क्लीसिया की आराधनाओं, वशिष अवसरों □ वं अन्□ य सभी कार्यो में व्□ यवस्□ था □ वं प्रबन्□ ध देखना तथा अपना पूरा सहयोग देना है

□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□□□□□□□

(□□□□□)

□□ □□□ □□□ □□

□□□□□□□ □□□ -

1कुरि न्थियों 4:2 के अनुसार

“

भण्□ डारी केलि□ यह

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

आवश्□यक है कि विश्□वासयोग्□य निकले □ ,,

□□□□□□□ □□□

- इस प्रकार कोषाध्□यक्ष का विश्□वासयोग्□य होना अत्□यन्□त प्रमुख बात

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

है□ क्लीसयिा की आय-व्□ यय क समुचति ब्□ योरा रखना तथा क्लीसयिा के समय - समय पर इसक स्□ पष्□ ट लेखा देना आवश्□ यक है□

□□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□□□□ □□□ -

"

इसी प्रकार स्□ त्री□ यां□ भी सम्□ मानीय हों, द्वेषपूर्ण गपशप करने वाली न हों, परन्□ तु संयमी तथा सब बातों में वशि□ वासयोग्□ य हों□

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

,,

(1तीमुथयियुस 3:11)

□□□□□□□ □□□ -

इस प्रकार स्□ त्री□ यों को आत्मकिता में परपिक्□ क, सम्□ मानीय, संयमी और वशि्□ वासयोग्□ य होना चाहि□ , आलसी और

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

बक्वादी नहीं□

□□□□□□□□□ -

हे हमारे पिता तुझे
धन्□यवाद देते हैं कि तूने
इन लोगों को चुन लिया है
कि ये तेरी कलीसिया की
उन्□नति में सहयोग दें□
इन समस्□त पदाधिकारियों

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

के पवित्रता की सामर्थ्□य और आशीष से भर दे कि ये अपने आप को क्लीसिया के कार्यो के लिये सम्□पूर्ण रीति से अर्पण करें□ हम प्रार्थना करते हैं कि समस्□त सदस्□यों को भी प्रेम, सहभागिता व सेवा

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

की आत्□मा से परिपूर्ण कर कि सब पूरे समर्पण □वं विश्□वासयोग्□यता के साथ मिलकर तेरी महिमा कर सकें□ जो प्रतिज्ञा□ं ये तेरी उपस्थिति में लेते हैं उन्□हें वे सदैव स्□मरण रहें□ इनके जीवन

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

किसी के लिए ठोकर का नहीं किन्तु आशीष का ही कारण हों क्योंकि यह प्रार्थना हम तेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम से मांगते हैं। आमीन!

□□□-:

(पास्टर मुख्य

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

मोमबत्ती जलाकर हाथ में ले□ सभी पदाधिकारी □ क्र□ क करके क्रमवार अपनी-अपनी मोमबत्ती जलाकर निर्धारित स्□ थान पर खड़े हो जा□ □)

□□□□□□□ □□ □□□□□□□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□□□□□□□□□

□□ □□□ -

प्रभु यीशु ने कहा तुमने मुझे नहीं चुना परन्□ तु मैंने तुम्□ हें चुना है इसलयिे तुम प्रभु की बुलाहट को बहूमूल्□ य समझकर अपने को अर्पण करो□ तुम जो

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

कलीसिया के प्राचीन/सेवक/सेविका/कोषाध्□ यक्ष, आदि नियुक्□ त किये गए हो, तुम्□ हारे हाथों में जलता हुआ प्रकाश न बुझने पाए□ □ प्रभु यीशु मसीह के कार्य की ज्□ योति सभों तक

पहुंचाना, क्लीसयिा की
□क्ता □वं उन्□नति
तुम्□हारा परम कर्त्तव्□य
हो□

क्लीसयिा के अगुवों के
द्वारा आप क्लीसयिा की
सेवकाई के लयिे चुने गये
हैं, अत□ आप

परमेश्□वर की उपस्थिति में संपूर्ण कलीसिया के सामने अर्पण की ये प्रतज्ञि□ करें□

□□□□□□□□□□□ -

□□□□□□□ -

क्□या आप कलीसिया के सभी कार्यो □वं

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

जमि□ मेदारियों को पूरे समर्पण, लगन □ वं वशि□ वासयोग्□ यता से पूर्ण करेंगे?

□□□□ - जी हां□

□□□□□□□□ - क्□ या

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

आप अपनी भाषा, कार्य, व□ यवहार, आचरण, □ वं सम्□ पूर्ण जीवन शैली के द्वारा प्रभु यीशु मसीह की गवाही प्रकट करेंगे?

□□□□ - जी हां□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□□□□ -क्□ या आप अपने घर क सही प्रंबध करेंगे? □ वं उसे प्रभु यीशु मसीह की गवाही क माध्□ यम बनायेंगे?

□□□□ - जी हां□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□□□□ -क्□ या आप हर आराधनाओं में अपने परविार सहति सम्मलिति होंगे?

□□□□ -जी हां□

□□□□□□□ -क्□ या

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

आप प्रार्थना करने में तथा परमेश्□ वर के वचन के ज्ञान में निरन्□ तर आगे बढ़ेंगे?

□□□□ - जी हां□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□□□□ -

परमेश्□ वर आप सब को आशीष दे□

□□□□□□□ □□

□□□□□□ □□□

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□□□□□□□□□

□□□□□□

□□□□□□□□□ - मैं

प्रतजि्ञा करता/करती हूं कि

मैं अपनी कलीसयिाई

ज़ि□ □ म्□ मेदारी को पूरी

नषि्□ ठा, समर्पण,

वशि्□ वासयोग्□ यता,

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

नम्रता और दीनता के साथ पूर्ण करूंगा/करूंगी

और क्लीसिया की आत्मिक उन्□ नति के लि□ हर समय प्रार्थना के साथ प्रयास करूंगा

□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□- पास्□टर के साथ क्लीसिया के सभी अगुवे या संबद्ध क्लीसिया के पास्□टर्स इन नव नियुक्□त पदाधिकारियों पर हाथ रखें □ वं इनके अर्पण

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

हेतु प्रार्थना करें

□

□□□□□□□□□ -हे सर्वशक्तिमान पिता परमेश्□वर प्रभु यीशु मसीह के नाम से हम तेरे अनुग्रह के सिंहासन के

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

सामने आये हैं

□ हम तेरा धन्□ यवाद करते हैं तेरी सारी आशीषों केलयिे, इस समय में हम वशिेष रूप से तेरा धन्□ यवाद करते हैं कि इस स्□ थान पर तेरे नाम से इस क्लीसयिा की

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

स्□ थापना की गई, हम तेरा धन्□ यवाद करते हैं कि तूने इस क्लीसिया को नरिन्□ तर संभाला, आशीषित किया और आगे बढ़ाया है□

पिता हम तेरा धन्□ यवाद करते हैं कि तूने इन सेवकों को चुना हैं कि इनके द्वारा

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

कलीसिया के कार्य और भी अधिक सुचारू और व्□ यवस्थित रूप से हो सकें□ हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि इनके क़दम तेरे वचन के मार्ग पर स्थिर रहें□ किसी भी प्रकार का अधर्म इन पर प्रभुता न

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

करने पाये, इनके होठों से तेरी स्□ तुति हो, इनकी जीभ तेरे वचन के गीत गाये, इनके हाथ अपेक्षा से कहीं अधिक बढ़कर तेरी सेवकाई के लिये कार्य करें, इनका ध्□ यान तेरी चेतावनियों पर लगा रहे□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

हर □ क प्रकार के कुकर्मो से ये दूर रहें और नरिन्□ तर तेरी वधियों को पूरा कर सकें और उसी पर अटल और स्थरि रह सकें□ इन सेवकों पर तू अपने मुख का प्रकाश चमका कि तेरी शोभा और तेरी गवाही

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

इनके जीवनों से प्रगट हो□ ये किसी भी प्रकार से किसी के लिये ठोकर का कारण न बनें, तेरा भय इन□ हें हर प्रकार की बुराई से बचा□ , तेरी पवित्र आत□ मा की अगुवाई और मार्गदर्शन इन□ हें क्लीसिया के हर

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

कार्य को करने के लिये

प्राप्□ त हो□ हे पवित्र

पिता परमेश्□ वर हम इन

पदाधिकारियों को कलीसिया

के कार्य के निमित्त तुझे

अर्पण करते हैं, इन्□ हें

अपनी सामर्थ्□ य,

आशीष और सेवा करने

वाली आत्□ मा से परपिूर्ण कर, सब समस्□ याओं को हल करने में इनकी सहायता कर कि ये बड़े साहस, उत्□ साह और सेवा की भावना के साथ अपने कर्त्तव्□ य को पूर्ण कर तेरे राज्□ य को फैलाने और

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

क्लीसिया को दृढ़ करने में लगे रहें□ सभी पदाधिकारियों में प्रेम, क्षमा, सहयोग, □ क्ता और सामंजस्□ यता दे□ शैतान किसी भी प्रकार से इनमें फूट, जलन, घमंड, छल और अन्□ य

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

दुर्भावना□ं न पनपने दे□ इनके जीवन तुझे ग्रहणयोग्□ य और दूसरों के लयिे आशीष का कारण बनें क्□ योंकि इस बनिती को हम प्रभु यीशु मसीह के नाम से मांगते हैं ग्रहण कर□ आमीन!

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□ □ □ □ – परमेश्□ वर तुम को आशीष दे और तुम्□ हारी रक्षा करे□ परमेश्□ वर तुम पर अपने मुख का प्रकाश चमका□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

और तुम पर अनुग्रह करे□ परमेश्□ वर अपना मुख तुम्□ हारी ओर करे और तुम्□ हें शान्ति दे□ आमीन!

(□□□□□□□□□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्[illegible]दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

[illegible] -------

[illegible]

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □

□

)

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□

—

□□□□ □□□ □□□

□□□□□□

□□□□□□□ □□□

1. यीशु पास जाऊंगा

ज्□ योति में ज्□ योति में

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

उसके साथ मैं चलूंगा

उसकी ज्□ योति में

□□□□□-

चलेंगे हम ज्□ योति में,

ज्□ योति में

चलेंगे हम ज्□ योति में

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

साथ उसकी ज्□ योति
में□

2. क्षमा प्राप्□ त मैं
करूंगा ज्□ योति में,
ज्□ योति में सारे पाप क
छोड़ूंगा उसकी

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

ज्□ योति में□

3. सेवा ख्रीष्□ ट की करूंगा

ज्□ योति में, ज्□ योति में

सामर्थ्□ य उससे पाऊंगा उसकी

ज्□ योति में□

4. क्□ या कर सकेगा शैतान,

ज्□ योति में, ज्□ योति में सामर्थ्□ य उससे पाऊंगा उसकी ज्□ योति में□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

5. जब हो मरने का समय, ज्□ योति में, ज्□ योति में मुझे होगा कुछ न भय उसकी ज्□ योति में□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

6. स्□ वर्ग पर जब मैं जाऊंगा

ज्□ योति में,

ज्□ योति में

नित्□ य आनंदित रहूंगा

सदा

ज्□ योति में□

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

□□□□□□□ -

मैं कलीसयिा के सभी
सदस्□यों को
प्रोत्□साहति करता हूं कि
आराधना के पश्□चात्
सभी सदस्□य हाथ
मलिकर इन नव

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:27 -

अभिषिक्□ त पदाधिकारियों को बधाई दें□